जातीयता की रक्षा के लिए संघर्ष करने वाले

सुरेन्द्र नाथ बनर्जी



श्री सत्यभक्त
पूर्व सम्पादक चाँद, सतयुग, प्रणवीर

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जातीयता की रक्षा के लिए संघर्ष करने वाले

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

अब से एक सौ वर्ष पूर्व भारतीय राजनीति और समाज की अवस्था आज की अपेक्षा बहुत भिन्न थी। सारे देश में अंग्रेजों का दबदबा पूरी तरह से कायम था। गदर को हुये थोड़ा ही समय हुआ था और उसमें अंग्रेजी सैनिकों और अधिकारियों ने जनता को जिस बुरी तरह से मारा था उसका आतङ्क भी चारों तरफ छाया हुआ था। उस समय ब्रिटिश सरकार का सौभाग्य सूर्य मध्य-गगन में आ चुका था और वह संसार में सबसे बड़े शक्तिशाली, प्रतापी राष्ट्र के रूप में मानी जाती थी। कोई उसका विरोध करने का साहस नहीं करता था। सब कोई अंग्रेजों की कृपा के भूखे रहते थे।

एक तरफ तो प्रजा के अधिकाँश लोग इस प्रकार अंग्रेजों की खुशामद-दरामद करके कुछ लाभ उठाने की चेष्टा करते रहते थे और दूसरी तरफ वे ही लोग धर्म और प्राचीनता के नियमों का ढोल पीट कर लोगों को नवीन परिवर्तनों तथा सुधारों को अपनाने से रोक रहे थे। स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह, विदेश-यात्रा आदि सभी विषयों में ये लोग टांग अड़ाते थे। ऐसे समय में कुछ लोग सामने आये जिन्होंने राजनीतिक और सामाजिक, दोनों क्षेत्रों में सुधार करने का बीड़ा उठाया। श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी भी उनमें से एक थे।

जब सन् १८७१ में सुरेन्द्र बाबू विलायत से आई. सी. एस. (सिविल सर्विस) की परीक्षा पास करके आये और सिलहट (आसाम) में असिस्टेण्ट मैजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त किये गये तो उनके मित्रों तथा सम्बन्धियों को ही नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देश की गति विधि का ध्यान रखने वाले अन्य लोगों को भी बड़ा गौरव अनुभव हुआ था । कारण कि उससे पहले केवल सत्येन्द्रनाथ ठाकुर ने इस परीक्षा को उत्तीर्ण किया था और अब सुरेन्द्र बाबू और उनके दो साथी आई. सी. एस. बनकर आये थे । इन चार के अतिरिक्त भारत के सभी डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट और असिस्टैण्ट मैजिस्ट्रेट आदि अंगरेज ही थे । भारत में शिक्षा प्राप्त व्यक्ति अधिक से अधिक डिप्टी कलक्टर के पद तक ही पहुँचते थे । जब बाबू बंकिम-चन्द्र चटर्जी कलकत्ता यूनीवर्सिटी की बी. ए. परीक्षा में 'यूनीवर्सिटी के सब से प्रथम गेजुएट' के रूप में उत्तीर्ण हुये तो उनकी सफलता पर प्रसन्न होकर बंगाल के गवर्नर ने स्वयं उनको बुलाया और डिप्टीकलक्टर का पद देने का शुभ संवाद सुनाया। बात तो ठीक थी, पर बंकिम बाबू बड़े पितृभक्त थे, इस लिये उत्तर दिया कि मैं इसके लिये अपने पिता से पूँछ लूँ । लाट साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ और कहने लगे कि 'क्या आप इससे भी किसी और उच्च पद की आशा रखते हैं ?' अर्थात् उस समय क्या अंगरेज अधिकारी और क्या भारत के उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति सबकी निगाह में डिप्टी कलक्टरी एक बहुत ऊँचा लक्ष्य था ।

इस लिये जब १८७१ में सुरेन्द्रबाबू, रमेशचन्द्र दत्त और बिहारी लाल गुप्त—तीन मित्र 'सिविलियन' बनकर भरत में आये तो लोगों को बड़ा हर्ष हुआ और जगह-जगह उनका स्वागत सत्कार भी किया गया ।

पर एक अन्य दृष्टि से इस कार्य में कुछ कठिनाई थी । अनेक अंगरेज अफसर जिनके सहयोगी के रूप में नये आई. सी. एस. वालों को काम करना पड़ता था, संकीर्ण मनोवृत्ति के होते थे । वे भारतीयों को अपने समान पद का अधिकारी बनने देखकर जलन अनुभव करते थे और हर तरह से ऐसी चेष्टा करते थे कि उनको अपदस्थ किया जाय अथवा उनकी हीनता सिद्ध की जाय ।

दुर्भाग्य समझिये या सौभाग्य सुरेन्द्रबाबू को सिलहट के जिस डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० सदरलैण्ड के सहयोगी के रूप में नियुक्त किया गया, वे इसी मनोवृत्ति के थे । वे असली अँगरेज भी न थे वरन् ऐग्लोइंडियन थे इस लिए भारतवासियों के सम्मुख अपने 'गोरा' होने का और भी घमण्ड दिखलाते थे और भारतियों को 'काला आदमी' समझ कर उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इधर सुरेन्द्र बाबू भारतीयता के गौरव को मानने वाले स्वाभिमानी व्यक्ति थे। इसलिये प्रथम दिन से ही ये सदरलैण्ड को नजरों में खटकने लगे। वे इनसे रूखा व्यवहार करते और बहुत सख्त काम लेते थे। इनको काम की तो पर्वाह न थी, क्योंकि योग्यता में ये किसी से कम न थे, पर वहाँ रंग के आधार पर जो भेद-भाव का व्यवहार किया जाता था, वह इनको सहन नहीं होता था।

इसी समय एक घटना और हो गई। वहाँ पर मि. पासफोर्ड नाम के एक असिस्टेण्ट मैजिस्ट्रेट और थे जो इनसे दो वर्ष पहले से काम कर रहे थे। जब सरकार की तरफ से मैजिस्ट्रेटों की डिपार्टमैंटल परीक्षा हुई तो उसमें पासफोर्ड और सुरेन्द्र बाबू दोनों ने भाग लिया। दो वर्ष का अनुभव होने पर भी पासफोर्ड असफल हो गये और सुरेन्द्रनाथ पास हो गये। इसका नतीजा यह हुआ कि सभी योरोपियन तथा ऐंग्लोइंडियन इनको टेढ़ी निगाह से देखने लगे। सदरलैण्ड को यह बात बहुत ही बुरी लगी कि एक भारतीय अपनी योग्यता के आधार पर प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट के अधिकार पा जाय और एक अँगरेज, जो उनसे पहले से काम कर रहा है उससे नीचा रह जाय। इस लिये उन्होंने उल्टी-सीधी लिखा-पढ़ी करके पासफोर्ड को ही उक्त पद दिला दिया और सुरेन्द्र बाबू पर नाराजी ही बनी रही।

आगे चलकर इस वैमनस्य में एक कारण और सम्मिलित हो गया। एण्डरसन नाम के अँगरेज सिलहट में ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट होकर आये। उनसे सुरेन्द्र बाबू की बहुत घनिष्ठता हो गई, पर सदरलैण्ड साहब से उनकी नहीं पट सकी। अगर कोई दूसरा दुनियादार आदमी होता तो दोनों अफसरों की अनबन को देखकर एण्डरसन का साथ छोड़ देता और प्रधान अफसर की इच्छानुकूल ही काम करता। पर सुरेन्द्रबाबू ने अपनी स्वाधीन मनोवृत्ति के कारण इस बात पर ध्यान न दिया। इससे सदरलैण्ड और भी नाराज रहने लगे और बात-बात पर सुरेन्द्र बाबू से कैफियत तलब करने लगे। इससे इनका मन उस काम से बराबर हटता चला गया।

अब सदरलैण्ड इनको अधःपतित करने की चाल सोचने लगे। उसी समय न मालूम सदरलैण्ड की योजना से या वैसे ही गलती हो जाने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कारण सुरेन्द्र बाबू के पेशकार ने उनसे एक हुक्मनामे पर गलत दस्तखत करा लिये। उसमें लिखा था कि युधिष्ठिर नाम के एक अपराधी का नाम फरार (जेल से भागने वालों) में दर्ज कर लिया जाय। पर वह व्यक्ति वास्तव में जेल से भागा नहीं था। अफसरों के लिये ऐसी गलती कोई खास बात नहीं समझी जाती, और यदि वह अफसर 'गोरा' होता तो कोई उस घटना का जिक्र भी न करता। पर सुरेन्द्र बाबू के मामले में सदरलैण्ड ने इसे एक संगीन अपराध समझा और इस सम्बन्ध में हाईकोर्ट तथा भारत सरकार तक लिखापढ़ी करके एक हलचल पैदा कर दी। इस कारण मामले की जाँच करने के लिये एक कमीशन नियुक्त किया जिसने सुरेन्द्र बाबू पर चौदह इल्जाम लगाये। सुरेन्द्र बाबू ने अपने को निर्दोष बतलाया, पर कमीशन ने उनकी बात न मानकर उन्हें दोषी करार दे कर नौकरी से हटाने का निर्णय दे दिया। इस प्रकार वे कठिनता से दो वर्ष ही सरकारी नौकरी कर सके।

सुरेन्द्र बाबू मनस्वी और वीर प्रकृति के व्यक्ति थे, इस लिये वे इस अन्याय को सहज ही स्वीकार कर लेने को तैयार न हुये। वे सीधे इंगलैण्ड पहुँचे और इण्डिया आफिस के सामने अपना मामला उपस्थित किया। पर वहाँ एक भारतीय का पक्ष लेकर कई अंगरेज अफसरों के निर्णय को रद्द करने वाला कौन था! इस लिये वहाँ भी इनकी प्रार्थना अस्वीकार करदी गई और लिखित आदेश दे दिया कि सुरेन्द्र बाबू 'इंडियन' सिविल सर्विस' से पृथक कर दिये गये। इस आदेश को पाकर सुरेन्द्र बाबू ने कहा—'अब मेरे जीवन का एक अध्याय समाप्त हो गया। मैं ने बड़े परिश्राम से यह लड़ाई लड़ी, परन्तु असफल रहा। अब मेरे लिये किसी प्रकार की सरकारी नौकरी का सुयोग नहीं रह गया है। पर इससे मैं निराश नहीं हूँ।' वे एक ऐसे मनस्वी व्यक्ति थे जो न तो दुःख में व्यथित होते है और न सुख में फूल जाते हैं। उनकी धर्मपत्नी भी ऐसे ही विचारों की और सब प्रकार से उनके अनुकूल थीं। इस लिये सुरेन्द्र बाबू सरकार के निर्णय से तनिक भी न घबड़ाये, और शान्त-चित्त से दूसरे क्षेत्र की खोज में लग गये।

दूसरी बात यह है कि इस तरह की घटनाओं से विशेष दुःख और घबराहट उन लोगों को होती है जिनका दृष्टिकोण बिल्कुल वैयक्तिक होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर जिनके हृदय में सार्वजनिक सेवा का थोड़ा-सा भी भाव उदय हो चुका है और जो जानते हैं कि हम जिस समाज के अंग है उसका कुछ हित-साधन करना भी हमारा कर्तव्य है, वे ऐसे अवसर पर अपने मन को संतुलित हो रखते हैं। यदि एक तत्त्वज्ञ की दृष्टि से विचार किया जाय तो इस प्रकार सरकारी नौकरी से हटाया जाना दुर्भाग्य के बजाय एक सौभाग्य ही सिद्ध हुआ। इसके कारण सुरेन्द्रबाबू को देश तथा समाज की सेवा का जो अवसर मिला और उन्होंने शिक्षा तथा समाज-सुधार से लेकर देश के स्वाधीनता-संग्राम में जो महत्त्वपूर्ण कार्य करके दिखलाये उससे जनता का ही कल्याण नहीं हुआ वे स्वयं भी देशपूज्य बन गये। यदि वे आजन्म छोटे या बड़े मैजिस्ट्रेट के पद पर ही कार्य करते रहते अथवा उससे उन्नति करके कलक्टर, कमिश्नर आदि भी बन जाते तो आज कौन उनको इस प्रकार याद करता। गत सौ वर्षों में न जाने कितने हजार भारतीय इन पदों को प्राप्त कर चुके हैं, पर उनमें से कितनों का नाम हम जानते हैं? पर सुरेन्द्र बाबू को आज भी देश का एक निर्माता माना जाता है, उनकी देशभक्ति तथा समाज-सेवा की हार्दिक रूप से प्रशंसा की जाती है, तो इसका कारण यही है कि उन्होंने लोकहित के लिये अपनी शक्ति को लगाया और देश को आगे बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार का त्याग और बलिदान भी किया।

इस बात की सचाई श्री ए० ओ० ह्यूम जैसे निष्पक्ष अँगरेजों ने, जो स्वयं कलक्टर के पद पर काम करते थे, स्वीकार की थी। उन्होंने लिखा है कि 'भारतवर्ष की अँगरेज नौकरशाही सदैव इस बात की चेष्टा में रहती है कि शाही नौकरी का भवन भारतियों के प्रवेश से दूषित न होने पाये। इसी नीतिका शिकार सुरेन्द्र बाबू को होना पड़ा।" भारतवासियों को हीन समझने अथवा उनके साथ उस तरह का वर्ताव करने की मनोवृत्ति अँगरेजों में बाद में भी बराबर पाई गई। सन् १९०४ में जब भारतभक्त एण्ड्रूज साहब दिल्ली के स्टीफेंस कालेज में काम करने आये, तब भी वहाँ पर अँगरेज उन्हें यही समझाया करते थे कि 'आप भारतवासियों को कभी बराबरी का दर्जा न दें। इस बात को सदा याद रखें कि हम अँगरेज हैं और भारतवासी हमारे अधीन एक असभ्यता में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पिछड़ी जाति है । अगर आप भारतवासियों से भाई चारे का व्यवहार करेंगे आप अँग्रेजों का बड़ा अहित करेंगे ।'

जन्म और वंश—

सुरेन्द्र बाबू का जन्म सन् १८४८ में एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ था । ये लोग धार्मिक नियमों और अपने वंश की उच्चता तथा पवित्रता आदि के सम्बन्ध में बड़े कट्टर होते हैं । इस सम्बन्ध में सुरेन्द्र बाबू ने एक स्थान पर कहा है कि—'उनका परिवार, राजा वल्लालसेन के समय से ही, जिन्होंने कुलीनता का प्रचार किया था, अपनी पवित्रता को अभिमान और गौरव के साथ निवाहता रहा । वे कभी किसी प्रलोभन में नहीं पड़े और अपने सामाजिक महत्व के सामने सांसारिक सम्पदा और सुविधाओं को अनेक बार ठुकरा दिया ।' सुरेन्द्र बाबू के पितामह बड़े कट्टर और धार्मिक नियमों पर चलने वाले थे । दैनिक कर्म काण्ड में ही उनका बहुत-सा समय लग जाता था । पर उनके पिता डा० दुर्गाचरण बनर्जी अँगरेजी शिक्षा के कारण बहुत कुछ स्वतंत्र विचारों के हो गये थे । वे भोजन तथा व्यवहार में छुआछूत और विधि-निषेध के नियमों का पालन करना अनावश्यक मानने लगे थे । पर इसके साथ ही स्वभाव से नम्र, कृतज्ञ और कर्तव्यपरायण पुत्र थे । घर में अब भी पितामह के धार्मिक नियम ही प्रधान रूप से माने जाते थे, पर वे वहाँ उनका किसी प्रकार विरोध नहीं करते थे । अपने स्वतंत्र विचारों का प्रयोग व्यक्तिगत रूप से इस प्रकार करते थे कि उनको किसी प्रकार बुरा न लगे । इस प्रकार बालक सुरेन्द्र अपने घर की दो प्रकार की पारस्परिक विरोधी विचार-धाराओं के बीच बड़ा होने लगा । यद्यपि उनको दूसरों के आदेशानुसार चलना पड़ता था, पर दो प्रकार के वातावरण से सम्पर्क रहने के कारण उनमें एक प्रकार की खोज और विवेचन करने की प्रवृत्ति जागृत हो गई ।

भारतीय घरों में यह एक बड़ी त्रुटि होती है कि वहाँ छोटे बालकों की मनोवृत्ति की ओर कोई ध्यान नहीं देता और समझते हैं कि आगे चल कर वह स्वयं ठीक मार्ग का अनुसरण करने लग जायगा । पर इसका परिणाम यह होता है कि अधिकांश बालक दूषित विचार के लोगों की बातें सुनकर और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनके विपरीत कर्मों को देखकर गलत रास्ते पर चलने लग जाते हैं। यह स्थिति कभी संतोषजनक नहीं कही जा सकती। मां-बाप का कर्तव्य है कि खिलाने, पिलाने, पहिनाने की तरह लड़के के मानसिक उत्थान का भी सदा ध्यान रखें। इसमें अधिक समय या श्रम की आवश्यकता नहीं। यदि वे उनको कायदे से समझाते रहें और अपना आचरण भी ऐसा रखें और जो उनके लिये उदाहरण स्वरूप हो तो कोई कारण नहीं कि बालक रहो रास्ते पर न चले और घर की मर्यादा का पालन न करे।

पाँच वर्ष की आयु में इनको एक देशी पाठशाला में पढ़ने को भेजा गया। गुरुजी स्वभाव के क्रोधी थे और एक बार उन्होंने कुछ कटु शब्द कह दिये। बस इन्होंने उसी दिन से पाठशाला जाना बन्द कर दिया। फिर सब किसी ने इनको बहुत समझाया पर ये उस पाठशाला में न जाकर किसी दूसरी में ही गये और सात वर्ष की आयु में बंगाली की शिक्षा समाप्त करके अँगरेजी में दाखिल हो गये।

सुरेन्द्र बाबू का विश्वास था कि किसी भाषा की शिक्षा उसे बार-बार सुनते रहने से होती है, केवल व्याकरण और कोष रट लेने से काम नहीं चलता। संस्कृत भाषा केवल रटने के आधार पर सीखी जाती है इस लिये उसमें बड़ी कठिनाई होती है। इस बात की वास्तविकता उन्होंने अपने उदाहरण से भी सिद्धकर दी। जिस अंगरेजी स्कूल में इनका नाम लिखाया गया था उसमें मुख्यतः ऐग्लो इंडियन लड़के पढ़ते थे। जब स्कूल में नाम लिखा गया उस समय ये अँगरेजी का एक शब्द भी न जानते थे, पर इनके अन्य साथी ऐसे थे जो अँगरेजी के सिवाय और कुछ बोल ही न सकते थे। इस लिये शुरू में तो इन को बड़ी कठिनाई हुई, पर उन्होंने धैर्य से काम लेकर थोड़े ही दिनों में अँगरेजी बोलना सीख लिया। उनको पढ़ाने के लिये घर पर कोई मास्टर नहीं रखा गया, फिर भी उन्होंने स्वयं परिश्रम करके अँगरेजी और लैटिन जैसी अपरिचित भाषाओं को सीख लिया। उन्होंने स्वयं लिखा है कि इस कार्य में उनको काफी कठिनाइयाँ और कष्ट उठाने पड़े पर इससे उनको स्वावलम्बन का अभ्यास भी हो गया जो आगामी जीवन में बड़ा सहायक सिद्ध हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुरेन्द्र बाबू स्कूल और कालेज में बड़ी मेहनत से पढ़ते थे। इसलिये वे कभी फेल नहीं हुये। सन् १८६७ में बी० ए० की परीक्षा भी ऊँची श्रेणी में पास करली। इनके अँगरेज प्रोफेसर मि० जान साइमन इनकी लगन को देख कर बडे प्रसन्न रहते थे और बी० ए० पास होते ही उन्होंने उनके पिता से इन्हें सिविल सर्विस की परीक्षा देने के लिये इंगलैण्ड भेजने को कहा। पिता तो पहले से ही इसका निश्चय कर चुके थे। इस सम्बन्ध में सुरेन्द्र बाबू ने अपने संस्मरणों में लिखा है—'मेरे पिता ने इस बात को तुरन्त स्वीकार कर लिया। मैं उनके सम्बन्ध में इतना ही कह सकता हूँ कि उनसे मुझे जीवन पथ पर अग्रसर होने में सदा प्रेरणा और उत्साह ही मिला। वे प्रसिद्ध डाक्टर तो थे ही, साथ ही उनमें उनमें मनुष्य की प्रकृति का अनुमान कर लेने की शक्ति भी अद्भुत थी। सन् १८५३ में जब मैं केवल ५ वर्ष का था, तब उन्होंने एक वसीयत नामा लिखा था जिसमें इस बात की हिदायत थी कि मैं अपनी शिक्षा के सम्पूर्ण करने के लिये इंगलैण्ड भेजा जाऊँ। मेरी बाल्यावस्था से ही उन्होंने निश्चय कर लिया था कि इंगलैण्ड में शिक्षा पाना मेरे लिये श्रेयस्कर होगा।'

डा० दुर्गा चरण बनर्जी अपने लड़कों को अच्छी शिक्षा दिलाने के साथ ही उनके स्वास्थ्य की उन्नति का भी पूरा ध्यान रखते थे। बचपन से ही सब भाइयों को नियमित दण्ड बैठक आदि देशी कसरतें करने की आदत डाल दी गई थी जो फिर अन्त तक कायम रही। इतना ही नहीं उन्होंने इनके व्यायाम और कुश्ती का अभ्यास कराने के लिये एक पहलवान नियुक्त कर दिया था जो इनको अखाड़े में प्रतिदिन अभ्यास कराता। इसका परिणाम यह हुआ कि ये जीवन के अन्त तक सशक्त और कर्मठ बने रहे। इनके एक भाई कैप्टेन जितेन्द्र नाथ बनर्जी ने तो इस विषय में इतनी उन्नति की कि उनको तत्कालीन बंगालियों में सर्वाधिक बलिष्ठ माना जाने लगा। सुरेन्द्र बाबू को निश्चय हो गया था कि जीवन की अन्य समस्त सफलताओं के लिये स्वस्थ और आरोग्य रहना भी एक प्रधान शर्त है। वे बंगाल के युवकों को भी सदा व्यायाम करते रहने की सम्मति देते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाज-सुधार और देशसेवा की ओर--

सामज सुधार और देश उन्नति का शौक भी सुरेन्द्रबाबू को विद्यार्थी अवस्था से ही लग गया था। उस समय देश की हालत वर्तमान समय से बहुत भिन्न थी। न तो सभा-समाजों का अधिक प्रचार था और न इतने समाचार पत्र और मासिकपत्र आदि निकलते थे। बडे-बड़े वक्ताओं की सभाओं में भी थोड़े से श्रोता उपस्थित होते थे। उस समय बंगाल ही क्या भारतवर्ष भर में श्री केशवचन्द्र सेन का नाम वक्ता की हैसियत से प्रसिद्ध था। विलायत में भी वे अपनी वक्तृताओं द्वारा लाखों व्यक्तियों को मुग्ध कर चुके थे और इसी सन्दर्भ में महारानी विक्टोरिया से भी भेंट कर चुके थे। सुरेन्द्र बाबू केशवचन्द्र के बड़े प्रशंसक थे और प्रायः उनके भाषणों को सुनने जाया करते थे। वहीं से उनको स्वयं भाषण करने की रुचि उत्पन्न हुई और विद्यार्थी अवस्था में ही अच्छी तरह व्याख्यान देने लग गये।

उस समय तक लाउडस्पीकरों का प्रचार नहीं हुआ था और वक्ताओं का एक गुण यह भी था कि उनकी आवाज तेज और दूर तक सुनाई देने वाली हो। सुरेन्द्र बाबू इस विषय में सबसे बढ़े-चढ़े थे। उनकी आवाज को सभा के सबसे दूर के कोने में बैठा हुआ व्यक्ति भी अच्छी तरह सुन सकता था। बाद में जब वे कांग्रेस के प्रधान नेता होकर समस्त देश में विख्यात हो गये तब भी इस दृष्टि से उनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता था। वे देश भर में सर्वोत्कृष्ट व्याख्यानदाताओं में से एक समझे जाते थे। श्रीमती ऐनी बीसेंट भी इस प्रकार बहुत प्रसिद्ध वक्ता मानी जाती थीं। इन लोगों की यह तारीफ वक्तृत्वकला की दृष्टि से की जाती थी। पर प्रभाव की दृष्टि से महात्मा गाँधी सर्वोपरि थे यद्यपि उनका भाषण सुनने में सामान्य लगता था। इसका कारण यही था कि वे जो कुछ कहते थे पूर्ण सत्य भावना से कहते थे और स्वयं भी उस पर आचरण करते थे।

दूसरे नेता जिनका जिनका प्रभाव सुरेन्द्र बाबू पर आरंभिक जीवन में पड़ा, पं० ईश्वर चन्द्र विद्या सागर थे। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर को लोग 'दया सागर' भी कहा करते थे। बहुत बड़े विद्वान् और उच्चपदस्थ सरकारी अधिकारी होने पर भी वे स्वयं बड़ी सादगी से रहते थे, थोड़े से खर्च में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



काम चलाते थे और बाकी सब आमदनी जो प्रतिमास वेतन तथा पुस्तकों की बिक्री से कई सौ रुपये की होती थी, सब दूसरों की सहायता में खर्च कर देते थे। वे हिन्दू विधवाओं की दुर्दशा देखकर बड़े व्यथित होते थे और इस लिये बड़ा आन्दोलन और परिश्रम करके 'विधवा विवाह कानून' पास कराया था और स्वयं चेष्टा करके अनेक विधवाओं का पुनर्विवाह कराया था। सुरेन्द्र नाथ भी इस प्रचार कार्य से बहुत प्रभावित हुये थे। उनके बाबा तो इसके विरोधी थे और पिता पक्षपाती। सुरेन्द्र बाबू ने लिखा है—'अपनी किशोरावस्था में मैं चिल्ला उठता था कि इस महापुरुष का सन्देश कब पूरा होगा? और अब अपने जीवन की संध्या में भी मैं उसी प्रकार चिल्लाता हूँ।"

तीसरा आन्दोलन श्री प्यारेचरण सरकार का था। इस समय बंगाल के नवयुवकों की दशा बहुत पतित होती जाती थी। थोड़ी-सी पाश्चात्य शिक्षा पाकर उनका मिथ्या अभिमान भड़क उठा और वे अँगरेजों की रहन-सहन की नकल करना सब से बड़ा काम समझने लगे। फैशन ग्रहण करने तक तो विशेष दोष नहीं माना गया पर जब अंगरेजों की देखा-देखी उनमें मद्यपान की प्रवृत्ति भी बहुत अधिक परिमाण में बढ़ने लगी, तब देश हितैषी सज्जन चौकन्ने हुये और इस कुप्रवृत्ति को रोकने के लिये आन्दोलन शुरू किया। यद्यपि श्री प्यारेचरण को सुरेन्द्र बाबू ने कभी देखा नहीं था, क्योंकि उनकी मृत्यु हो चुकी थी, पर उनके आन्दोलन का इन पर बहुत प्रभाव पड़ा और वे विद्यार्थियों में शुद्ध जीवन का प्रचार करने लगे। इस अन्दोलन में केशव चन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा पादरी पी० एच० डाल ने भी पर्याप्त सहयोग दिया। नवयुवकों के सुधार का जो कार्य सुरेन्द्र बाबू ने उस समय अपनाया वह एक प्रकार से आजन्म रहा, क्योंकि आगे चलकर इनके जीवन का अधिकाश भाग अध्यापक के रूप में विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण और उनको प्रगति पथ पर अग्रसर करने में ही व्यतीत हुआ।

पहली विलायत यात्रा—

जैसा ऊपर कहा जा चुका है सुरेन्द्रनाथ बी० ए० की परीक्षा पास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने के उपरान्त आई सी.एस. को परीक्षा देने के लिये विलायत भेजे गये थे। उस समय विलायत यात्रा एक बहुत बड़ी बात थी और जो कोई वहाँ हो आता था उसकी चर्चा जनता में सर्वत्र फैल जाती थी। वहाँ जाकर रहने में और भी अनेक कठिनाइयों की संभावना की जाती थी, पर सबसे बड़ी कठिनाई तो 'हिन्दू-धर्म' की थी। उस समय तक कट्टर हिन्दू विदेश यात्रा को बहुत बड़ा पाप समझते थे और जो कोई ऐसा करता था उसे जाति-च्युत कर दिया जाता था। सुरेन्द्र नाथ को भी उसकी धमकी दी गई और विलायत से भारत लौटने पर उनका जातीय बहिष्कार किया भी गया। पर अपने स्वतंत्र विचारों के कारण उन्होंने इसकी कुछ भी पर्वाह नहीं की और कुटुम्बीजनों ने भी, उनकी इतनी बड़ी सफलता को अपने लिये गौरव का विषय समझा और पूर्ववत् ही सम्बन्ध बनाये रखा।

फिर भी पुराने विचार के निकट सम्बन्धियों और परिचितजनों का इतना भय तो था ही कि वे पहले से ही हो हल्ला मचा कर कोई विघ्न उत्पन्न न करदें। इस लिये यात्रा की तैयारियाँ बहुत गुप्त रूप से की गईं। माता को भी इसलिये खबर नहीं दी गई कि वह स्नेह के कारण अपने पुत्र को इतनी दूर और अज्ञात स्थान में भेजने को हर्गिज राजी न होगी। चलते समय जब सुरेन्द्र बाबू उनके चरण स्पर्श करने को पहुँचे तो विलायत जाने की बात सुनकर उनको बेहोशी आ गई।

पिता से अंतिम भेंट का जिक्र भी बड़ा हृदयस्पर्शी है। उसका वर्णन करते हुये स्वयं सुरेन्द्र नाथ ने लिखा है—यह उनके अंतिम दर्शन थे जो इस संसार में मुझे मिलने वाले थे, क्योंकि जब मैं इंगलैण्ड में ही था तभी उनका स्वर्गवास हो गया। मैं उनको पहुँचाने गाड़ी तक गया। गाड़ी में बैठकर उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और फिर मुँह फेर लिया। उनके नेत्रों से आँसू बह कर गालों पर आ रहे थे। मैं केवल उनके मुँह से एक शब्द ही सुन सका, मानो वे भविष्यवाणी कर रहे हों कि यही हमारा अंतिम मिलन है। पचास वर्ष से भी अधिक बीत गये पर वह घटना मेरे स्मृति पटल पर उसी प्रकार अंकित है। पिता और पुत्र सदा के लिये एक दूसरे से विदा हो गये। मैं तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आश्चर्यपूर्ण तथा कठिनाइयों से भरे लम्बे जीवन की यात्रा करने जा रहा था और वे घर पहुँच मेरी माता को यथाशक्ति सान्त्वना देने लगे। मेरे हृदय में अपने पिता के लिये साधारण पितृप्रेम की अपेक्षा अधिक स्नेह है। उनके गरीबों के प्रति सहानुभूतियुक्त स्वभाव ने मेरे ऊपर बड़ा प्रभाव डाला, और मुझे इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम प्रेरणा उन्हीं से मिली। योरोपीय पाठकों को चाहे यह भावुकता जान पड़े परन्तु हिन्दुओं के लिये यह नितान्त स्वाभाविक और आत्मा की वह धारा है जो अपने आप निकल पड़ती है।"

इंडियन सिविल सर्विस के लिये संघर्ष—

सुरेन्द्र बाबू इंगलैण्ड में १८ महीने तक एक अँगरेज कुटुम्ब में रहे और आवश्यक अध्ययन करते रहे। इसके पश्चात् सन् १८६९ में जो प्रतियोगिता परीक्षा हुई उसमें वे सफलता पूर्वक उत्तीर्ण हो गये। पर सिविल सर्विस के कमिश्नरों ने एक त्रुटि यह निकालदी कि सुरेन्द्र बाबू की उम्र २१ वर्ष से अधिक हो गई है इस लिये वे परीक्षा में भाग नहीं ले सकते। सुरेन्द्र बाबू ने इस आज्ञा को गलत बता कर उसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि बंगाल की सामाजिक प्रथा के अनुसार उन्हें ने अपनी आयु गर्भ दिन से गणना करके लिखाई थी, जब कि अन्य लोग अपनी आयु का हिसाब जन्म-दिन से लगाते हैं। ऐसी ही बात इनके साथ बिहारी लाल गुप्त के सम्बन्ध में भी कही गई।

सुरेन्द्र बाबू स्वभाव से ही निर्भीक और अन्याय का विरोध करने वाले थे। उन्होंने बहुत जोरों से कमिश्नरों की आज्ञा का प्रतिवाद किया और बंगाल के अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों ने भी उनकी बात का समर्थन किया। वहाँ के महारमानाथ टैगोर, महाराजा ज्योतीन्द्र नाथ टैगोर, पंडित ईश्वरचन्द्र विद्या सागर, राजा राजेन्द्र लाल मित्र, राय कृष्णदास पाल बहादुर आदि प्रमुख नेताओं ने एक हलफनामा पेश किया कि सुरेन्द्र बाबू ने गर्भ दिन से आयु की जो गणना बतलाई है वह सत्य है। भारत के समाचार पत्रों में भी इस सम्बन्ध में खूब चर्चा हुई और लोगों ने सरकारी आज्ञा को अन्याय पूर्ण बतलाया। पर अँगरेज कमिश्नरों ने इन सब बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया और वे अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निर्णय पर अड़े ही रहे।

यह देख कर सुरेन्द्र नाथ ने अन्य मार्ग का अवलम्बन किया और इंगलैण्ड की सब से बड़ी न्याय-संस्था 'क्वीन्स बेञ्च' के सम्मुख इस निर्णय के विरुद्ध दावा कर दिया। वे मि० जौन बेल से मिले जो बहुत दिनों तक कलकत्ते में बैरिस्टरी कर चुके थे, और अब वृद्धावस्था में अपने घर पर रह कर ही विश्राम कर रहे थे। उन्होंने सुरेन्द्र बाबू की पैरवी करना स्वीकार किया और किसी प्रकार की फीस लेने से भी इनकार किया। 'क्वीन्स बेञ्च' के सदस्य बड़े विद्वान और इंगलैण्ड के प्रसिद्ध न्यायाधीश थे। उन्होंने सुरेन्द्र बाबू के कथन को यथार्थ माना और उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। इस पर कमिश्नरों को अपनी गलती स्वीकार करनी पड़ी और सुरेन्द्र बाबू तथा श्री पद बाबा जी ठाकुर के पास सूचना भेजी कि वे सिविल सर्विस में सम्मिलित कर लिये गये। यह सुरेन्द्र बाबू की एक बहुत बड़ी नैतिक विजय मानी गई और उनका नाम काफी प्रसिद्ध हो गया।

इस संघर्ष में लग भग एक वर्ष का समय लग गया था इस लिये सरकारी आदेश में इन लोगों को यह सुविधा दी गई कि यदि वे चाहें तो अंतिम परीक्षा एक वर्ष बाद भी दे सकते हैं। पर सुरेन्द्र बाबू उसी वर्ष परीक्षा देने को तैयार हो गये और विशेष परिश्रम करके सम्मान सहित उत्तीर्ण हो गये उनकी इस सफलता और दृढ़ता पर देश-विदेश के सब लोग बहुत प्रसन्न हुये और सिविल सर्विस के एक अध्यायपक प्रोफेसर मार्ली ने कहा-'बनर्जी! लोग तुम्हारे संघर्ष को याद रखने के लिये तुम्हारी मूर्ति बनाकर रखेंगे।' भारतीय समाचार पत्रों में कहा गया कि सुरेन्द्र बाबू ने इस प्रकार संघर्ष करके देश की एक सेवा की है, इससे अन्य बहुत से लोगों का भी उपकार होगा।

पर इस बीच में एक दुःख जनक घटना यह हुई कि सुरेन्द्र बाबू के पिता दुर्गाचरण बनर्जी का देहान्त हो गया। वे अपने पुत्र की सफलता का समाचार जानने को बड़े उत्सुक थे, पर सिविल सर्विस की परीक्षा होने से कुछ समय पूर्व ही उनका देहावसान हो जाने से यह अभिलाषा उनके मन के मन ही में चली गई। जैसा ऊपर कहा जा चुका है सुरेन्द्र बाबू बड़े पितृभक्त थे। इस लिये जब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह समाचार विलायत में उनको मालूम हुआ तो वे अर्ध-मूर्च्छित जैसे हो गये। पिता की मृत्यु का उनको बहुत अधिक शोक हुआ। डा० दुर्गाचरण को अपने इस पुत्र से बहुत आशाएँ थीं और इस लिये उन्होंने इनको अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने में कोई कसर नहीं रहने दी थी। पर असामयिक मृत्यु हो जाने से, जब कि उनका पुत्र सामने भी नहीं हजारों कोस दूर समुद्र पार था, तब उनके हृदय में कैसे भाव उठ रहे होंगे इसका अनुमान सहज में किया जा सकता है। पर दोनों को ही इस बात का संतोष अवश्य था कि अपना-अपना कर्तव्य पालन कर रहे हैं।

दूसरी विदेश यात्रा—

आई. सी. एस. की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर भारत आने और सिलहट में असिस्टेण्ट कलक्टर के पद पर नियुक्त किये जाने के पश्चात् अँगरेज कलक्टर से संघर्ष की जो घटना हुई उसका उल्लेख आरम्भ में किया हो जा चुका है। यदि कोई पेट पालने का उद्देश्य रखने वाला ही व्यक्ति होता, तो अँगरेज उच्च पदाधिकारियों की खुशामद-दरामद करके काम चला सकता था। पर सुरेन्द्र नाथ के हृदय में तो आरम्भ ही से जातीयता और आत्म गौरव की भावना जागृत थी। वे इस प्रकार पदावनत होकर किसी को यह कहने का अवसर कैसे दे सकते थे कि भारतवासी निम्न कोटि के व्यक्ति होते हैं। इस लिये उन्होंने सरकारी नौकरी को और भविष्य में जीवन निर्वाह कैसे होगा, इसकी तनिक भी परवाह न करके स्वाभिमान का परिचय दिया और अँगरेज अफसर के सम्मुख मस्तक नहीं झुकाया।

इसके पश्चात् यद्यपि अन्याय का प्रतिकार करने की भावना से वे इंगलैण्ड तक गये और उन्होंने अँगरेजी न्याय को चुनौती दी, पर परिणाम वही हुआ जिसकी आशा थी। उस समय अँगरेज शक्ति के मद में डूबे हुये थे। और भारतवर्ष पूर्व ही स्वाधीनता की प्रथम मुठभेड़ में हार चुका था। इस लिये गोरे शासक यहाँ के प्रत्येक व्यक्ति को हीनता की दृष्टि से ही देखते थे। इधर सुरेन्द्र बाबू जातीयता के रंग में रंगे थे। वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि वैदिक सभ्यता की उत्तराधिकारी भारतीय जाति योरोप की कल से उन्नति करने वाली जातियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से किसी प्रकार हीन नहीं हो सकती।

इस लिये सुरेन्द्र बाबू ने इस समस्त घटना को एक व्यक्तिगत मामले की तरह न लेकर देश व्यापी समस्या की निगाह से देखा और उसके लिये निर्भीकता पूर्वक संघर्ष करते ही गये। भारतीय देशप्रेमियों और समाचार पत्रों ने भी हर तरह से उनका समर्थन किया और उस छोटी आयु में ही उनको जनता के सम्मुख एक देशभक्त के रूप में ला खड़ा किया। स्वार्थ त्याग और जाति सेवा की भावना की ऐसी ही महिमा है। कहाँ तो नौकरी से निकाले जाने की घटना उनके सामने एक विपत्ति के रूप में आई थी और कहाँ अपनी वीरता तथा धीरता के कारण वे उसमें से एक माननीय देश सेवक के रूप में बाहर निकले। जिस प्रकार तपाये जाने से सुवर्ण दुगुना दमकने लगता है, खराद पर चढ़ाये जाने से हीरा की चमक देखने योग्य हो जाती है, उसी प्रकार इस संघर्ष ने उनकी आन्तरिक शक्ति और दृढ़ता को प्रच्छन्न से प्रत्यक्ष करके दिखला दिया।

नौकरी से हटाये जाने का निश्चय हो जाने के पश्चात् उन्होंने विलायत में ही कुछ समय तक ठहर कर बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने का विचार किया। पर उपर्युक्त संघर्ष के कारण इनका नाम प्रसिद्ध हो जाने के कारण अँगरेज अधिकारियों ने उसके लिये भी मंजूरी नहीं दी। सुरेन्द्र बाबू को इस सब क्षेत्रों में प्रवेश मिलता भी कैसे, जब प्रकृति ने उनको सार्वजनिक सेवा के लिये गढ़ा था। इस लिए इंगलैण्ड में प्राप्त असफलताओं से उनको जरा भी चिन्ता नहीं हुई, और उन्होंने उस समस्त घटना पर गहरा विचार करके निम्न उद्गार प्रकट किये—

"मैंने पहले ही से उस कार्य का कुछ विचार कर लिया था जो जीवन में मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यह अन्याय मुझे केवल इस लिये सहना पड़ा है कि मैं एक भारतीय था। मैं एक ऐसे समाज का सदस्य था जिसमें कोई संगठन नहीं है, जिसका कोई एक सार्वजनिक मत नहीं है, और जिसका अपने देश के शासन में कोई अधिकार नहीं है। युवावस्था के जोश में मुझे यही कि हम लोग इस समय अपनी जन्मभूमि में ही दास, लकड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

काटने वाले या बोझा ढोने वाले कुली बना दिये गये हैं। जो कुछ अन्याय मेरे साथ किया गया वह हमारी जाति की नितान्त शक्तिहीनता का द्योतक था। क्या अन्य किसी देश वाले हमारी तरह इस व्यवहार को सहन कर सकते थे? इस लिये विपत्ति के समय जब ऐसा जान पड़ता था कि दैव भौंह चढ़ाये खड़ा है तब मैंने यह निश्चय किया कि इस अवस्था में अपनी जाति की सहायता अवश्य करनी चाहिये। जिस प्रकार मृत्यु का परिणाम अधिक उच्च जीवन, और एक अधिक पवित्र परिवर्तन का प्रादुर्भाव होता है, मेरी असफलता का भी वैसा ही परिणाम हुआ।"

जब सुरेन्द्र बाबू ने अपना जीवन देश-सेवा के कार्यों में उत्सर्ग करने का निश्चय कर लिया, तो उन्होंने इसके लिये कुछ तैयारी करना भी आवश्यक समझा। वे जानते थे कि जब साधारण क्लर्की या मास्टरी करने के लिये भी ट्रेनिङ्ग लेनी पड़ती है, टेक्निकल विषयों में वर्षों तक किसी उस्ताद को शागिर्दी करनी पड़ती है, तब राजनीतिक और सामाजिक कार्य बिना कुछ शिक्षा ग्रहण किये किस प्रकार सुचारु रूप से किये जा सकते हैं?

आज तो नेतागीरी सब से सहज और तुरन्त अपने आप कर सकने लायक कार्य बन गया है। जिन लोगों ने कभी राजनीति का क-ख-ग भी नहीं पढ़ा और जो यह भी नहीं जानते कि 'समाज' शब्द का व्यापक अर्थ क्या है, वे भी चुनाव के मैदान में आकर एक दिन में 'नेता जी' बन बैठते हैं। जिन लोगों ने कभी देश का प्राचीन और नवीन इतिहास नहीं पढ़ा, जो भारतीय-संस्कृति के मूल तत्त्वों से भी सर्वथा अनजान हैं, जिन्होंने देश के आर्थिक जीवन की रत्तीभर भी जानकारी हासिल नहीं की, वे ही सभाओं के मंच पर खड़े होकर इधर-उधर की झूँठी-सच्ची बातें कहकर 'नेता' पदवी के अधिकारी बन बैठते हैं

पर सुरेन्द्र बाबू इस श्रेणी के नेता बनना नहीं चाहते थे। उनका लक्ष्य अपने पिछड़े हुये देशवासियों को प्रगति का मार्ग दर्शन कराना और अपने अधिकारों के लिये व्यवस्थित रीति से आन्दोलन करना सिखाना था। वे यह भी जानते थे कि जिन अँगरेजों के हाथों से हमको अपने अधिकार लेना है वे राज-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नीति में कितने पटु और अपना स्वार्थ साधन करने में कैसे कुशल होते हैं। इस लिये उन्होंने यह आवश्यक समझा कि योरोप के राजनीतिक अन्दोलनों और वहाँ के बड़े-नेताओं तथा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के जीवन वृत्तान्त और संघर्षों के इतिहास का बारीकी के साथ अध्ययन कर लिया जाय। अतएव जब उनको बेरिस्ट्री की परीक्षा में सम्मिलित करने से भी इनकार कर दिया गया तो उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये इंगलैण्ड में ठहरे रहे और १३ महीने तक वहाँ के बड़े-बड़े पुस्तकालयों मे दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह घण्टे बैठकर राजनीतिक साहित्य का अध्ययन करते रहे। उन्होंने स्वयं लिखा है कि 'इन तेरह महीनों में मैंने बड़ा परिश्रम किया। उस समय मैं यही जानता था कि मैं एक बड़े पवित्र कार्य में अपना समय व्यतीत कर रहा हूँ। उस समय के कार्यरत जीवन का स्मरण करके इस बुढ़ापे में भी मैं आह्लादित हो जाता हूँ।'

शिक्षक के रूप में—

कुछ समय पश्चात् महान देश सेवक पं० ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने सुरेन्द्र बाबू को अपने 'मेट्रोपोलिटन इनस्टीट्यूट' नामक कालेज में पढ़ाने के लिये नियुक्त कर दिया। यहाँ पर उनको यद्यपि २०० रु० मासिक ही वेतन मिलता था, जो असिस्टैण्ट मैजिस्ट्रेट की अपेक्षा आधा ही था, पर सुरेन्द्र बाबू को अधिक खुशी इस बात की थी, कि इस कार्य में वे नव-युवकों के सम्पर्क में रहते थे, और उनमें समाज-सेवा और देशभक्ति की भावना उत्पन्न कर सकते थे। इस कार्य को उन्होंने इतना महत्त्वपूर्ण समझा कि थोड़े समय पश्चात् जब उनको त्रिपुरा के महाराज ने अपने यहाँ ५०० रु० मासिक पर सेक्रेटरी का कार्य करने को कहा तो उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। सन् १८८० में उन्होंने 'मेट्रोपोलिटन' को छोड़ कर 'फ्री चर्च कालेज' में अँगरेजी साहित्य के प्रोफेसर का पद ग्रहण कर लिया और दो वर्ष पश्चात् स्वयं अपनी एक शिक्षा संस्था स्थापित की, जो बाद में 'रिपन कालेज' के नाम से प्रसिद्ध हुई और जिसमें से उन्होंने सन् १९१२ तक हजारों विद्यार्थियों को सुयोग्य नागरिक बनाकर निकाला उनके विद्यार्थियों में से अनेक समाज सेवक और देशभक्त के रूप में प्रसिद्ध हुये। उन्होंने श्री आनन्द मोहन के सहयोग से एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'विद्यार्थी परिषद' की स्थापना भी की, जिसने देश के युवक-वर्ग को प्रगति-मार्ग पर चलाने में बहुत कार्य किया।

उस समय तक राजनीति का विषय बहुत गूढ़ समझा जाता था और शिक्षकगण विद्यार्थियों को प्रायः सामाजिक तथा धार्मिक कर्तव्यों की ही शिक्षा दिया करते थे। पर सुरेन्द्र नाथ ने योरोप व वहाँ की राजनीति और इतिहास का अध्ययन करके यह समझ लिया था कि जब तक नवयुवकों में राजनीतिक भावना उत्पन्न न की जायगी तब तक देशोत्थान का कार्य पूरा नहीं हो सकता। इस सम्बन्ध में वे सबसे अधिक प्रभावित इटली के देशभक्त मैजिनी से थे। वे विद्यार्थियों के सम्मुख प्रायः मैजिनी के जीवन के बारे में भाषण किया करते थे। उनके भाषणों के अन्य विषय भी ऐसे हुआ करते थे, जैसे 'भारत वर्ष की एकता', 'सिख इतिहास पर एक दृष्टि', 'चैतन्य प्रभु की महानता' 'इतिहास का अनुशीलन' आदि। वे युवकों को समझाते थे कि किस प्रकार सिखों ने संगठित होकर देश की स्वाधीनता के लिये संघर्ष किया, किस प्रकार चैतन्य महाप्रभु ने जनता को सामाजिक और धार्मिक समानता का सन्देश देकर वैष्णव धर्म को उदार बनाया और ऊँचा उठाया।

भारत वर्ष की एकता के विषय में वे स्वीटजरलैण्ड तथा इटली का उदाहरण देकर बतलाते थे कि जिस प्रकार वहाँ कई भाषायें बोली जाती हैं और विभिन्न धार्मिक सम्प्रदाय भी पाये जाते हैं, फिर भी उन्होंने एक राष्ट्र और एक जातीयता का निर्माण किया है उसी तरह हम भी भारतवर्ष में सब प्रान्तों के लोगों को एक समुदाय में संगठित कर सकते हैं। वे बड़े जोरों के साथ घोषणा करते थे—'हमको देशोत्थान का झण्डा ऊँचा उठाना चाहिये। उसके ऊपर 'एकता' का शब्द सोने के अक्षरों में लिखा हुआ हो। हमारे भीतर धार्मिक और सामाजिक भेदभाव पाये जाते हैं, फिर भी एक तथ्य ऐसा है जिस पर हम सब सकते हैं—वह है देश का कल्याण—देश को सौभाग्य शाली बनाना।'

'इंडियन एसोशियेशन' की स्थापना—

भारत वर्ष की एकता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये सुरेन्द्र नाथ ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शीघ्र ही कुछ मित्रों के सहयोग से 'इंडियन एसोशियेशन' की स्थापना की, क्योंकि उस समय तक भारतवर्ष में ऐसी कोई संस्था न थी जो समस्त देश को एक संगठनके अन्तर्गत लाने की चेष्टा करती हो। 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' इससे दस वर्ष बाद स्थापित हुई। इस लिये सुरेन्द्र बाबू की 'इंडियन एसोशियेशन' ने २०-२५ वर्ष तक देश में जागृति फैलाने और विभिन्न प्रकार के अधिकारों को प्राप्त करने के लिये प्रशंसनीय कार्य किया। ब्रिटिश सरकार नहीं चाहती थी कि भारतीय व्यक्ति 'इंडियन सिविल सर्विस' की परीक्षा में सम्मिलित होकर भारत के शासन-कार्य में अधिक संख्या में भाग लेने लगें। इस लिये उसने एक नियम बनाया कि 'सिविल सर्विस' में दाखिल होने वालों की अधिक से अधिक आयु २१ वर्ष के बजाय १९ वर्ष होनी चाहिये। अगर यह नियम प्रचलित कर दिया जाता तो कोई भारतीय सिविल सर्विस में दाखिल नहीं हो पाता। इस लिये 'इंडियन एसोशियेशन' ने इसके विरोध करने का निश्चय किया। इस लिये सुरेन्द्र नाथ ने कई महीने तक देश भर का दौरा करके सैकड़ों व्याख्यान दिये और इस अन्याय के प्रति भारत में एक जोरदार आन्दोलन उत्पन्न कर दिया।

पर जब ब्रिटिश सरकार समस्त भारत वर्ष द्वारा विरोध किये जाने पर भी कोई ध्यान न दिया तो एसोशियेशन ने एक प्रस्ताव पास करके श्री लाल मोहन घोष को विलायत जाकर आन्दोलन करने को भेजा। उन्होंने वहाँ पहुँच कर जान ब्राइट के सहयोग से एक बड़ी सभा का आयोजन किया और उसके सामने भारतीय समस्या को ऐसी योग्यता और भावना पूर्ण ढंग से उपस्थित किया कि श्रोताओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा और २४ घण्टे के भीतर पार्लामेन्ट में यह प्रश्न उठाया गया। इसका सरकार पर काफी दबाव पड़ा और उसे भारतीयों को सिविल सर्विस में भाग लेने के लिये कितनी ही सुविधायें प्रदान करनी पड़ीं।

दूसरा अवसर 'वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट' के समय आया, जब ऐसोशियेशन ने एक अन्यायपूर्ण कानून के विरुद्ध कदम उठाया। इस कानून का उद्देश्य था देशी भाषा के पत्रों की स्वाधीनता का हनन करना, उनका गला घोंट देना, जिससे वे सरकार के किसी कार्य की आलोचना न कर सकें, न जनहित के लिये कोई आन्दोलन उठा सकें। इसके विरुद्ध सुरेन्द्र बाबू ने जब आन्दोलन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उठाया तो भारत के अँगरेज अधिकारियों ने उसे हर तरह से दबाने की कोशिश की पर सुरेन्द्र नाथ ने इस विषय में इंगलैण्ड के प्रधान मंत्री मि० ग्लैडस्टन से पत्र व्यवहार किया, जो बड़े उदार सिद्धान्तों के व्यक्ति थे। अन्त में कुछ समय बाद लार्ड रिपन के आने पर यह कानून रद्द कर दिया गया। लार्ड रिपन ने भारत वर्ष में म्युनिसपल संस्थाओं की स्थापना पर भी विशेष ध्यान दिया। विश्वास था कि इन संस्थाओं द्वारा ही भारतवासियों को आधुनिक प्रजातांत्रिक प्रणाली राजनीति का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। सुरेन्द्र नाथ ने इस सम्बन्ध में भी बहुत जोर लगाया और कुछ ही समय बाद इस विषय में इतनी प्रगति हुई कि स्वयं उन्होंने कलकत्ता कार्पोरेशन के सदस्य के रूप में बहुत कुछ उपयोगी कार्य किया।

पत्र-सम्पादन

सुरेन्द्रनाथ जहाँ एक बहुत बड़े शिक्षा क्षेत्र के विधायक तथा उच्च कोटि के भाषणकर्ता थे, वहाँ उनकी दूसरी विशेषता सम्पादन-कला में दक्षता थी। उन्होंने 'बंगाली' नाम का प्रसिद्ध समाचार पत्र निकाला और लगातार ४३ वर्ष तक उसका सम्पादन किया। वह पहले साप्ताहिक था फिर सन् १९८० से दैनिक कर दिया गया। भारतीय समाचार पत्रों में वही सब से पहला था जिसने 'रूटर' की 'न्यूज सर्विस' खरीदना आरंभ किया था। बहुत वर्षों तक उसकी गिनती भारत के प्रसिद्ध दैनिक पत्रों मे होती रही। इस सम्बन्ध में भारत के प्रसिद्ध विद्वान डा० सच्चिदानन्द सिन्हा ने कहा था—सम्पादन की दृष्टि से सुरेन्द्र नाथ का स्थान बहुत ऊँचा था और उन्होंने सदैव पत्र की महत्ता और उच्चता को कायम रखा। अपने विरोधियों के प्रति भी उन्होंने कभी अन्याय युक्त व्यवहार नहीं किया और न कभी प्रांतीयता के संकीर्ण घेरे में अपने पत्र को आबद्ध होने दिया।' एक अन्य आलोचक ने लिखा था कि 'बंगाली' पत्र के लेखों में सदैव भारतीयता की भावना ही प्रकट होती थी।"

"बंगाली" पर सन् १८८३ में हाईकोर्ट के एक जज मि० नोरिस ने मान हानि का मुकदमा चलाया। बात यह हुई कि किसी मुकदमे में उन्होंने अभियोग कर्ताओं से उनके घर में पूजी जाने वाली शालग्राम की मूर्ति को कोर्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में लाने को कहा और वैसा ही किया गया। सुरेन्द्र बाबू ने जब यह समाचार एक अन्य पत्र में पढ़ा तो उनको यह बात बहुत बुरी लगी कि जज ने मूर्ति को, जिसे हम भगवान मानकर पूजते हैं, अदालत में लाने का आदेश दिया। उन्होंने इसका विरोध करते हुये यहाँ तक लिख दिया कि ऐसा जज देश के सर्वोच्च न्यायालय में नियुक्त किये जाने के अयोग्य है। बाद में पता लगा कि मि० नोरिस ने शालग्राम को लाने की आज्ञा वादी और प्रतिवादी दोनों पक्षों की पूर्ण रजामन्दी से ही दी थी।

अपनी भूल मालूम होने पर सुरेन्द्र बाबू ने अपनी टिप्पणी वापस लेली और क्षमा प्रार्थना करली पर मि० नोरिस ने उन पर मुकदमा चला ही दिया और हाईकोर्ट की फुलबेंच ने उनको दो महीने की सादी कैद की सजा सुना दी यह उस समय अपने ढंग का एक ही मुकदमा था और इससे सुरेन्द्र बाबू का नाम समस्त देश में बिजली की तरह फैल गया। सब तरह के लोगों ने एक प्रसिद्ध नेता को एक सामान्य भूल के लिये, और वह भी क्षमा-प्रार्थना कर लेने पर ऐसा दण्ड दिया जाना अनुचित बतलाया। इससे उनकी लोकप्रियता बहुत अधिक बढ़ गई और समाप्त होने के दिन हजारों व्यक्तियों की भीड़ उनका स्वागत करने को जेल के फाटक पर पहुँची। पर अधिकारी गण पहले ही इसी घटना से भयभीत थे और उन्होंने लोगों के एकत्रित होने के पूर्व ही प्रातः चार बजे उनको जगाया और एक घोड़ा गाड़ी में बैठाकर चुपके से 'बंगाली' पत्र के कार्यालय में लेजाकर छोड़ दिया।

उस समय इस घटना के कारण समस्त देश में जो सनसनी फैली थी वह बहुत समय तक लोगों की याद बनी रही। लाहौर, अमृतसर, आगरा पूना जैसे दूरवर्ती स्थानों में भी इसके विरोध में सभायें की गईं और सुरेन्द्र बाबू को एक वीर देश सेवक तथा शहीद के रूप में चित्रित किया गया। कारण यह था कि उस समय तक केवल दो राजनीतिक नेताओं को ही इस प्रकार सरकार द्वारा दण्डित किया गया था—एक लोकमान्य तिलक और दूसरे सुरेन्द्र बाबू। इस प्रकार सुरेन्द्र बाबू को दण्ड दिये जाने की घटना देश में एक नवीन जागृति फैलाने और एकता की भावना की वृद्धि होने का कारण बन गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कांग्रेस के प्रेसीडेण्ट —

सुरेन्द्र बाबू को मुख्य लक्ष्य उस समय भारतीय जनता में एक राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करना था। वे समझते थे कि जब तक लोग अपने को केवल बंगाली, पंजाबी, मराठा, मद्रासी आदि मानते हुए बैठे रहेंगे और देश की समस्याओं पर केवल 'भारत वासी' होने की दृष्टि से विचार करना न सीखेंगे, तब तक उनके किसी आन्दोलन में शक्ति नहीं आ सकती और न सरकार पर उसका प्रभाव पड़ सकता है। इस लिये वे अपनी संस्था 'इंडियन एसोशियेशन' तथा 'बंगाली' पत्र द्वारा निरन्तर देश में इसी भाव को फैलाने की चेष्टा किया करते थे। उन्होंने सन् १८८३ और ८५ में कलकत्ता में 'नेशनल कान्फरेंस' का आयोजन किया था जिसमें सब प्रांतों के प्रतिनिधियों ने एकत्रित होकर राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार किया और सरकार से शासन कार्य में सहायता देने के लिए चुने हुये प्रजा प्रतिनिधियों को कौंसिल बनाने की माँग की थी। अनेक लोगों का मत है कि सुरेन्द्र बाबू द्वारा आयोजित इन कान्फरेंसों से प्रेरणा लेकर ही अन्य देश भक्तों ने 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' की स्थापना की। स्वयम् महात्मा गाँधी ने एक स्थान पर लिखा है कि—'सुरेन्द्र बाबू को चाहे कांग्रेस का प्रारम्भ करने वाला न माना जाय पर वह उसके प्रवर्तकों में एक अवश्य मान जायेंगे।'

कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में तो, जो २८ दिसम्बर १८८५ को बम्बई में हुआ था वे इस कारण सम्मिलित न हो सके क्योंकि उसी समय उनकी कान्फरेंस का अधिवेशन भी कलकत्ता में हो रहा था। कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन उन्होंने बहुत प्रयत्न करके कलकत्ता में ही कराया और दादा भाई नौरोजी को आग्रह करके उसका अध्यक्ष बनाया। तब से लगभग तीस वर्ष तक वे कांग्रेस के एक मुख्य कार्यकर्ता और नेता बने रहे। कांग्रेस के देश व्यापी प्रचार और उसके लिये फण्ड इत्यादि एकत्रित करने का भार मुख्यतः उनके ऊपर ही रहा, और उनकी सेवाओं का आदर करके दो बार-सन् १८९५ में पूना अधिवेशन का और सन् १९०२ में अहमदाबाद अधिवेशन का अध्यक्ष उन्हीं को बनाया गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सन् १८९० में कांग्रेस ने निश्चित किया कि भारतीय नेताओं का एक डेपुटेशन (प्रतिनिधि मंडल) इंगलैण्ड में जाकर भारत के लिये प्रजातांत्रिक अधिकारों की माँग और उस देश की जनता को इसके पक्ष में करने के लिये प्रचार—कार्य करें। इसमें फीरोज शाह मेहता, मुधोल कर, उमेशचन्द्र बनर्जी आदि आठ नेता थे जिनमें से एक सुरेन्द्रनाथ भी थे। यह भी निश्चय किया गया कि ये सब लोग अपने आने जाने का व्यय स्वयं ही वहन करें। उस समय सुरेन्द्र बाबू के पास सब मिलाकर १३ हजार रु० था जो उनकी पत्नी के नाम से जमा था और इंगलैण्ड की यात्रा का खर्च ४ हजार रु० अनुमान किया गया था। इस प्रकार उनको अपनी समस्त सम्पत्ति का एक तिहाई भाग देश के एक आन्दोलन के लिये खर्च कर डालना था। पर वे इसके लिए खुशी से तैयार हो गये और उनकी सहधर्मिणी ने भी जो उनको सदैव राजनीतिक कार्य के लिये प्रेरणा देती रहती थी, बिना किसी संकोच के आवश्यक रुपया निकालकर उनको दे दिया।

सुरेन्द्र बाबू की पत्नी यद्यपि अधिक शिक्षित न थी, पर उन्होंने आजीवन हर कार्य में अपने पति का पूरी तरह से साथ दिया और कभी यह भाव प्रकट न किया कि वे सार्वजनिक सेवा से विरत होकर केवल कमाने और खाने के उद्देश्य तक ही अपने को सीमित कर लें। क्योंकि उस समय सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को अवश्य ही अपने स्वार्थ का बलिदान करके जन-सेवा का कार्य करना पड़ता था। वर्तमान महिला-समाज को अवश्य ही इन उदाहरणों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और स्वार्थ-भावना के कारण पुरुषों को समाज सेवा के कार्य से विरत करने की अपेक्षा उनको इसके लिये प्रेरणा देनी चाहिए।

देश सेवा के लिए आत्मत्याग—

हम बतला चुके हैं कि सुरेन्द्र बाबू ने देश सेवा और राष्ट्रीयता के प्रचार का कार्य उस समय आरम्भ किया जब साधारण जनता तो क्या अधिकांश पढ़े लिखे भी राजनीतिक मामलों से अनजान थे। इस लिये उस समय शासन की आलोचना करना, वार्षिक आय-व्यय (बजट) पर बहस करना, सरकार के अन्याय पूर्ण कार्यों के विरोध में प्रस्ताव पास कर देना भी बड़ी बात समझी जाती थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



इस कार्य प्रणाली को "वैध-मार्ग" कहा जाता था और शक्ति का प्रयोग करके, अर्थात् हिंसा, उपद्रव तथा विद्रोह की धमकी देकर शासन परिवर्तन करके अथवा स्वराज्य प्राप्त करने का प्रयत्न 'अवैध-मार्ग' माना जाता था। उस समय गदर को हुये थोड़ा ही समय हुआ था और अँगरेजी सरकार के दमन की याद लोगों को बनी हुई थी, इस लिये अवैध-मार्ग के पथिक बहुत कम थे। और यदि कोई भावुकता वश सिर उठाता भी था तो तुरन्त उसको कुचल दिया जाता था। ऐसी दशा में सुशिक्षित भारतवासी, जिनको देश या समाज की उन्नति का कुछ ख्याल आता था, वैध उपायों से ही काम लेते थे। सुरेन्द्र बाबू ऐसे विचार वालों के एक प्रसिद्ध नेता थे। सन् १८९५ में उन्होंने काँग्रेस के पूना अधिवेशन के अध्यक्षपद से कहा था

'यह कांग्रेस का ११ वाँ अधिवेशन है जब तक हमारा यह सामान्य कार्य क्रम भी पूरा हो सकेगा, तब तक ऐसे और भी बहुत से अधिवेशन हो चुकेंगे। मानव-प्रगति की गाड़ी धीरे-धीरे ही आगे बढ़ती है। पर जिसने अपने हाथ में हल की मूठ पकड़ ली है वह पीछे की तरफ मुड़ कर नहीं देख सकता। उसको एक लक्ष्य की पूर्ति के लिये ही अपने को अर्पित कर देना पड़ता है। अब तक न जाने हमारे कितने वीर साथी गिर चुके हैं और आगे चलकर न जाने कितने और गिरेंगे, तब कहीं जाकर यह कठिन यात्रा पूरी हो सकेगी और हम अपने लक्ष्य के दर्शन कर सकेंगे। इस लिये हम को धैर्य पूर्वक अपने लक्ष्य में अमिट श्रद्धा रखनी चाहिये। जान स्टुआर्ट मिल ने कहा है कि "दृढ़ विश्वास रखने वाला एक ही व्यक्ति निन्यानवे विश्वास रहित व्यक्तियों के बराबर है। हम कांग्रेसमैन अच्छी तरह समझते हैं कि हम क्या चाहते हैं, हम अपने विचारों को जानते हैं, हम अपनी कार्य प्रणाली को भी जानते हैं और दृढ़ता के साथ उन पर सदैव स्थिर रहेंगे। हम लोगों में से कितनों को ही तो अपने लक्ष्य के प्रति ऐसी गहरी श्रद्धा है, कि उसे इस संसार के बजाय किसी दूसरे ही लोक की वस्तु कहना चाहिये। ऐसी दशा में कौन कह सकता है कि भविष्य हमारा नहीं है।'

पूना अधिवेशन में सुरेन्द्र नाथ का भाषण बहुत अधिक पसन्द किया गया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और जब वे अंतिम दिन अधिवेशन का उपसंहार करने के लिये उठे तो लोगों में उत्साह की लहर दौड़ गई और वे अभूतपूर्व जोश में आकर सुरेन्द्र बाबू की जय जय करने लगे। लोगों के इस उत्साह और सम्मान का प्रभाव सुरेन्द्र नाथ पर भी इतना अधिक पड़ा कि उन्होंने उसी समय निम्नलिखित घोषणा की

'अगर मैं केवल इसी क्षण तक जीवित रहूँ और इसके बाद तुरन्त ही मेरा अन्त काल आ पहुँचे तो भी मैं अपने को सब से अधिक प्रसन्न मनुष्य समझूँगा। मैं जानता हूँ कि आप मेरी दीर्घायु की कामना करते हैं। पर मेरी आयु चाहे लम्बी हो या छोटी ही रह जाय, तो भी इस समय समस्त भारतवर्ष के इन प्रतिनिधियों के सम्मुख परमात्मा को साक्षी मानकर मैं यह घोषित करता हूँ कि मेरा जीवन आपकी सेवा के लिये ही होगा। वह उन अभिलाषाओं, उन आशाओं, उन विचारों को चरितार्थ करने में ही लगेगा जिनको हमारे राष्ट्र ने उद्घोषित किया है।'

इन उद्गारों के पढ़ने से प्रतीत होता है कि सुरेन्द्र बाबू के सिद्धान्त चाहे सन् १९१० और १९२० की राजनीतिक परिस्थिति की दृष्टि से 'नर्म' (मॉडरेट) ही क्यों न हों, पर उनका अपने कथन और प्रोग्राम में हार्दिक आस्था थी और वे उनके लिये उसी प्रकार त्याग और बलिदान करने को तैयार रहते थे जैसे कि अन्य 'गर्म' अथवा क्रांतिकारी कार्यकर्ता। और सच तो यह है कि उस समय सरकार की अर्थ-नीति, भारतीय उद्योग-धन्धों की अवनति, नौकरियाँ देने में पक्षपात आदि की स्पष्ट शब्दों में कड़ी आलोचना करना ही विद्रोह के तुल्य था, सुरेन्द्र बाबू का देश के प्रति प्रगाढ़ भावनाओं का पता इससे भी लगता है कि जब उनकी पत्नी का देहान्त हुआ तो उन्होंने शोक संतप्त होते हुये कांग्रेस-अधिवेशन में उपस्थिति होना स्थगित नहीं किया, और वहाँ की सब कार्यवाही वैसी ही सावधानी और तल्लीनता से की जैसी सदा से करते आये थे।

इसी प्रकार बंग-भंग के प्रतिकार स्वरूप स्वदेशी आन्दोलन के समय सन् १९०६ में जब पुलिस वालों ने बरीसाल में बिना किसी कारण ही प्रांतीय कॉंफरेंस के जलूस पर लाठीचार्ज किया उस समय सुरेन्द्र बाबू स्वयं पुलिस सुपरिन्टेडेण्ट के पास पहुँचे और कहा कि आप जलूस वालों को क्यों पीट रहे है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अगर कोई काम आपको गैर कानूनी जान पड़ता हो तो मुझे गिरफ्तार कर सकते हैं। 'इस पर उनको गिरफ्तार कर लिया गया और मैजिस्ट्रेट ने उसी समय उन पर ४०० रु० जुर्माना कर दिया।

इस आन्दोलन में सुरेन्द्र बाबू ने सरकार का बड़े साहस के साथ मुकाबला किया और समस्त देश में इतने जोरों से प्रचार कार्य किया कि केवल बंगाल में ही नहीं भारतवर्ष के कोने-कोने में स्वदेशी-व्यवहार और इंगलैण्ड के बने माल का बायकाट का आन्दोलन फैल गया। इससे जहाँ एक ओर स्वदेशी उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन मिला, वहाँ बाय काट के प्रभाव से इंगलैण्ड के कारखाने वालों के आसन हिल गये। इसका परिणाम यह हुआ कि पाँच-छः वर्ष के भीतर ही सरकार को अपनी भूल स्वीकार करके बंगाल के दोनों हिस्सों को जोड़ कर एक ही प्रांत बना देना पड़ा। वास्तव में सन् ११०६ का आन्दोलन सुरेन्द्र बाबू के जीवन में उत्थान का सबसे बड़ा अवसर था। उनको बंगाल का 'बिना ताज का बादशाह' कहा जाने लगा था। वे जहाँ कहीं जाते थे प्रत्येक स्टेशन पर या स्टीमर के घाटों पर उनका जोरों से स्वागत किया जाता था। इस सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं कहा था—"मनुष्य के जीवन में कभी-कभी ऐसे अवसर आते है जब कि उसका सम्पूर्ण जीवन सार्थक हो जाता है। मेरे लिये यह अवसर इसी प्रकार का है।'

हमारे जीवन में भी ऐसे अवसर दो-एक बार अवश्य आते हैं, पर खेद है कि हम उस समय स्वार्थ या भ्रम वश अपना कर्तव्य पालन नहीं कर पाते। इस लिये उस विशेष अवसर के लाभ से भी हम वंचित रह जाते हैं। सुरेन्द्र बाबू यद्यपि 'नर्म' (मॉडरेट) सिद्धान्त के अनुयायी थे और अन्त तक वे यही कहते रहे कि भारत वर्ष का हित इसी में है, कि वह वैध-आन्दोलन करता हुआ अपने अधिकारों की माँग करे और उसके लिये सरकार को विवश करने के लिये वैध ढंग से आन्दोलन भी करता रहे। पर बंगभंग आन्दोलन के अवसर पर कुछ समय के लिये वे भी वास्तव में 'गर्म' बन गये थे। बंगाल की घोषणा होते ही उन्होंने कहा—'सरकारी अधिकारियों ने इस कार्य को बहुत ही गुप्त रीति से करके भारतीय जनमत की घोर उपेक्षा की है जिसका उत्तरदायित्व भारत के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वायसराय लार्ड कर्जन और बंगाल के ले० गवर्नर सर एन्ड्रू फ्रेजर पर है। सरकार चाहे अपने मन में कैसी भी खुश क्यों न होती रहे, पर उसे यह समझ रखना चाहिये कि भारतीय राष्ट्र इस घोर अन्याय को कभी स्वीकार न करेगा और प्राणपण से इसके विरुद्ध संघर्ष करेगा।" इसके १५ दिनपश्चात् उन्होंने फिर अपने पत्र में लिखा—"हमने जो भविष्य वाणी की थी वह सत्य सिद्ध हुई। हमारे देश वासियों ने बंग-भंग के विरुद्ध जोरदार आन्दोलन छेड़ दिया है। संभव है सरकार पर इसका कोई प्रभाव न पड़े, पर उससे हमारा बहुत बड़ा नैतिक लाभ होने वाला है। हमने निश्चय कर लिया है कि हम इस आकस्मिक विपत्ति को अपने एक महान नैतिक विजय के रूप में बदल देंगे। अब हमारा आन्दोलन एक नये मार्ग पर जा रहा है। हमने इस अन्याय के विरुद्ध असंख्यों सभायें करके इसका विरोध किया. इसको मिटाने की प्रार्थना की, पर सरकार ने हमारी एक भी न सुनी। सरकार के इस अपमान पूर्ण व्यवहार को देखते हुये अब हम निष्क्रिय प्रतिरोध (पैसिव रैसिस्टेन्स) की नीति से काम लेंगे। इस समय समस्त बंगाल शोक मना रहा है।"

सुरेन्द्र बाबू के इन लेखों से विदित होता है कि सरकार के उपेक्षा-भाव को देख कर वे रोष में आ गये थे, और बंध-मार्ग के अंतिम शस्त्र "निष्क्रिय प्रतिरोध 'तथा' 'बायकाट' का प्रयोग करने को मैदान में उतर पड़े थे। वास्तव में यह एक क्रांतिकारी कदम था। सुरेन्द्र नाथ ने उच्च स्वर से घोषणा की कि यदि चीन वाले अमरीकन माल का सफलतापूर्वक बायकाट कर सकते हैं, तो भारतवासी उसी प्रकार अंगरेजी वस्तुओं का बायकाट क्यों नहीं कर सकते? सुरेन्द्र नाथ तथा अन्य नेताओं की चेष्टा से यह आन्दोलन शीघ्र ही भारतव्यापी बन गया और अन्त में ब्रिटिश गवर्नमेंट को उसके सम्मुख घुटने टेकने पड़े। बंग-भंग रद्द कर दिया गया।

कुछ समय पश्चात् महात्मा गाँधी ने इन्हीं "राजनीतिक शस्त्रों" का प्रयोग और भी व्यापक रूप से किया और भारत की अधिकाँश जनता ने उसमें भाग लिया। इसे संयोग या पार्टी बन्दी का कुपरिणाम ही कहना चाहिये कि उस समय सुरेन्द्र बाबू ने गाँधी जी का साथ न दिया, और नर्मदल के झण्डे के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



नीचे नये सुधारों के साथ सहयोग किया। यह एक ऐसा गलत कदम था कि जिसने उनकी ४० वर्षों की देश सेवा पर पानी फेर दिया। उस समय जनता 'गाँधी की आँधी" में उड़ी चली जा रही थी और देश में 'काया पलट'का एक अभूतपूर्व दृश्य दिखलाई पड़ रहा था। उस समय स्वार्थ के कारण और चाहे सिद्धान्त के कारण जो कोई उससे जरा भी विपरीत चला उसी की मिट्टी खराब हो गई। हम सुरेन्द्र बाबू पर स्वार्थपरता का दोषारोपण नहीं करते, क्योंकि उन्होंने आजन्म अपनी शक्ति तथा साधनों को देशोन्नति के कार्यों में ही लगाया था। पर 'गर्म' और 'नर्म' दल के पुराने मतभेद और विवाद के कारण राजनीतिक क्षेत्र में कुछ ऐसा वातावरण बन गया था कि जिससे नर्म दल के अधिकांश नेता गाँधी जी के सन् १९१९ वाले असहयोग आन्दोलन के विरोधी के रूप में दिखलाई पड़ने लगे। इस मतभेद के कारण उस समय जनता में नर्म—नेताओं की कैसी बदनामी होने लगी थी यह एक व्यंगात्मक पद्य से प्रकट होता है जो १९१९ में एक समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ था:—

स्वस्ति श्री समरत्थ शास्त्री सिलवाड सुरेन्द्रम।
सर्व उपमाजोग सप्रेतुमहु होउ सिसीडरम्'
वाक्यवादी वृद्ध वाचा जियो माडर्ट लीडरम्।
चपल चिन्तामणो तुमहूँ बने रहो एडीटरम्"
पत्र यह लिखतंग है परलोक सों श्री जयकर को
अमीचन्दहु को शुभासिर वाद जामें बाँच को।
हाल अपना क्या लिखें हे प्रेमपात्र कुटुम्बयो।
हैं सुशोभित यहाँ करते नर्क लैण्ड प्रदेश को।

यह था जनमत तथा देश की माँग के विरुद्ध मार्ग पर चलने का परिणाम। साधारण समय में तो सार्वजनिक विषयों पर मतभेद रखने की गुंजायश रहती है, पर जब राष्ट्र ने अपने उद्धार के लिए जीवन मरण का संग्राम छेड़ा हो, उस समय उससे विपरीत कार्य तो क्या कोई बात कहना भी अनुचित होता है। यदि यह कारण न होता तो माननीय सर और श्री सौ० वाई. चिन्तामणि, जैसे व्यक्तियों को, जो उस समय भी असहयोग में भाग लेने वाले परिचित जनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की तरह-तरह से व्यक्तिगत सहायता करते रहते थे, निन्दा न की जाती। इस पर से हम कह सकते हैं कि जन कल्याण के निस्स्वार्थ भाव से किये जाने वाले किसी आन्दोलन या सेवा कार्य का विरोध कभी न किया जाय। अपनी परिस्थिति या किसी अन्य विशेष कारण वश हम स्वयं उसमें भाग न ले सकें यह दूसरी बात है, उस दशा में हम चुपचाप भी रह सकते हैं। समय आने पर परिस्थिति स्वयम् ही स्पष्ट हो जाती है, और यदि हमारा मत ठीक हुआ तो जनता में पुनः प्रतिष्ठा कायम हो सकती है।

पर इस एक सामयिक घटना के कारण सुरेन्द्र बाबू की देश तथा समाज के प्रति की गई बहुसंख्यक सेवाओं का महत्त्व नष्ट नहीं हो सकता। उन्होंने उच्च श्रेणी की योग्यता होते हुये भी अपना उद्देश्य कभी धनोपार्जन अथवा वैभव-विलास की जिन्दगी बिताना नहीं बनाया, वरन् उनका समस्त जीवन सार्वजनिक सेवा का प्रतीक ही बना रहा। यद्यपि शासन-सुधारों के प्रचलित होने पर उन्होंने बंगाल प्रांत की शासन सभा में शिक्षा तथा स्थानिक स्वराज्य (म्युनिस्पैलिटी आदि) का मंत्री पद ग्रहण किया था, पर उस समय भी वे सार्वजनिक सेवा के कामों से उदासीन नहीं थे। सन् १९२२ में जब उनके प्रांत में भयंकर बाढ़ आई तो वे अपना विभाग न होने पर भी बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र में गये और जलती हुई धूप में बीस मील के भूभाग का दौरा करके पीड़ितों की दशा का निरीक्षण' किया उस समय वे ७४ वर्ष के वृद्ध थे और इस अतिरिक्त काम के फल स्वरूप बीमार होकर बहुत समय तक चारपाई पर पड़े रहे। सरकारी कार्य करते हुये भी सैकड़ों लोगों की सहायता करते रहे, जिनमें से बहुत से उनको विरोधी पार्टी वाले भी होते थे।

अब भी हमारे देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो अंगरेजों के शासन को 'स्वराज्य' की अपेक्षा उत्तम बतलाते हैं। मूर्ख और अशिक्षितों की बात तो छोड़ दीजिये लाखों पढ़ा-लिखों के मुँह से भी यह सुनने में आता है कि "वैसी हकूमत अब कहाँ देखने को मिलेगी।" पर सुरेन्द्र बाबू ने उस जमाने में भी जब अंगरेजी साम्राज्य का सूर्य भारत वर्ष में ही नहीं संसार भर में पूरी प्रखरता के साथ तप रहा था, काँग्रेस—अध्यक्ष के पद से भाषण करते हुये कहा था—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'साम्राज्य वाद प्रगति की गति को अवरुद्ध कर देता है । इस समय संसार में उसी का बोलबाला हो रहा है । इस समय साम्राज्य वाद का आशय 'एकतंत्र शासन' से है जिसमें शासन की समस्त सत्ता किसी निरंकुश राजा या सम्राट अथवा विजयी सेनापति के हाथ में रहती है । जैसा कि प्राचीन रोम में हुआ था और जैसा वर्तमान फ्राँस में दिखाई पड़ रहा है साम्राज्य वाद का परिणाम जनता के अधिकारों का हनन करके 'एक व्यक्ति का शासन' स्थापित होना दिखाई पड़ रहा है । यही कारण है कि आज इंगलैण्ड और उसके गोरे उपनिवेशों में स्वशासन (सेल्फ गवर्नमेण्ट) की प्रणाली प्रचलित है और शेष स्थानों में निरंकुशतापूर्ण शासन जारी रखा गया है ।

इसका दूरवर्ती परिणाम क्या होगा यह आज नहीं कहा जा सकता । क्या आगे चल कर जैसे-जैसे इसकी वृद्धि होगी यह प्रजातांत्रिक अधिकारों का घटाता चला जायगा, यह आज निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता । यह रहस्य तो समय के अन्तरतम में ही निहित है और इस सम्बन्ध में बड़े से बड़े भविष्यवक्ता का कथन भी असत्य सिद्ध हो सकता है । पर समस्त इतिहास के अनुशीलन से यही सिद्ध होता है कि जैसे-जैसे किसी साम्राज्य का शासन अन्य पराधीन देशों में फैलता जाता है, वैसे-वैसे ही लोक तन्त्र की शक्ति का ह्रास होता जाता है । अँगरेजी साम्राज्यवाद में अँगरेजी बोलने वाली प्रजा में ऐक्य भाव बढ़ता जाता है और उनका एक संघ बनता जाता है । हम भारतवासी उस संघ के बाहर खड़े रखे गये हैं । हम स्वाधीनता के इस पवित्र क्षेत्र में प्रविष्ट नहीं हो सकते । हम इस स्वाधीनता देवी के मंदिर की देहरी के भीतर पैर नहीं रख सकते । हम लोगों को केवल सेवा करने और दूर खड़े रहने का अधिकार ही दिया गया है । साम्राज्य के एक अंश की हैसियत से हमारी सेनायें दक्षिण अफरीका भेजी गई और उन्होंने नेटाल की रक्षा की । भारतीय सिपाहियों का दल चीन भेजा गया और उन्होंने अँगरेजी साम्राज्य के झंडे को पेकिङ्ग (चीन की राजधानी) के गढ़ के ऊपर गाढ़ दिया ।

हमारी यह राजभक्ति ऐसी वास्तविक, गहरी और आन्तरिक मानी गई है स्वयम् भारतमंत्री ने भी उसकी प्रशंसा की है । पर फिर भी हमको साम्राज्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के उन प्रजाजनों में नहीं गिना जाता जो उसके वैधानिक अधिकारों का लाभ उठा सकते हैं। हमारे देश में तो साम्राज्य वाद ने प्रतिगामिता की शक्तियों को ही प्रोत्साहन दिया है और केवल शान-शौकत की भावना को बढ़ाया है जिनसे लोगों का ध्यान देशोन्नति सम्बन्धी ठोस बातों की तरफ से हट जाय। इस लिये हम इस नये साम्राज्य वाद का उस रूप में स्वागत करने को तैयार नहीं है, जिसमें वह हमारे सामने उपस्थित किया जा रहा है। हम ऐसे साम्राज्य वाद को लेकर क्या करें जो खूब धन खर्च करके शान शौकत के जलसे तो दिखाए, यह आसाम के चाय बागानों के कुलियों की कष्ट गाथा को अनसुनी कर दे। इस साम्राज्य वाद में तो अधिकांश में हमारे देश के हितों का दूसरे लोगों के हितों के लिये बलिदान कर दिया जाता है, तब यह हमको किस प्रकार स्वीकार हो सकता है।

"इस परिस्थिति में अपने भाइयों से मैं यही कहना चाहता हूँ कि स्वाधीनता एक दिन में प्राप्त की जा सकने वाली वस्तु नहीं है। स्वाधीनता की देवी सहज में प्रसन्न नहीं हो जाती वरन् वह अपने भक्तों से लगातार तल्लीनता के साथ उद्योग कराना चाहती है। इससे हमको अपने स्वार्थ का बलिदान करने की प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिये क्यों कि इसके बिना वैधानिक अधिकारों की प्राप्ति संभव नहीं। पर क्या भारतवासियों को इस बात की शिक्षा देने की आवश्यकता है? वे तो बहुत समय से संसार के सम्मुख अपने इन गुणों को सिद्ध कर चुके हैं। भारतवर्ष के इतिहास का तो प्रत्येक पृष्ठ ऐसे आत्म-त्याग के उदाहरणों से भरा हुआ है। इसलिये वर्तमान काल के उत्तरदायित्व, भविष्य की आशा और भूतकाल की महिमा को ध्यान में रखते हुए हमको अपनी मातृभूमि की सेवा के लिये अधिक से अधिक उत्साह से कार्य करना चाहिये।"

यद्यपि आज हमको ये बातें बिल्कुल मामूली जान पड़ती हैं, पर आज से सत्तर वर्ष पहले जब अँगरेज गवर्नर जनरल साधारण जनता द्वारा देव लोक के सम्राट की तरह माना जाता था और जब संसार का कोई इंगलैंड को टेढ़ी निगाह से देखने का साहस का काम नहीं था। उस समय ऐसे विचार प्रकट करना भी कम साहस का काम नहीं था। उस समय तक बाँग्ला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

केवल एक प्रस्ताव पास करने वाली संस्था मात्र थी। देश भर में केवल लोकमान्य तिलक ऐसे नेता थे जो अँगरेजों से स्वराज्य का अधिकार लेने की बात मुँह से निकाल सकते थे। उनको इसके लिये दो-तीन बार जेल का दण्ड सहन करना पड़ा था। उस समय अधिकाँश शिक्षित तथा 'देशभक्त' कहलाने वालों की यही मान्यता थी कि यदि हमको कुछ अधिकार लेने हैं तो यह तभी संभव है जब इंगलैण्ड के शासन कर्ता और राजनीतिज्ञ हमारे अनुकूल हों। इसी कारण सुरेन्द्र बाबू की श्रेणी के राजनीतिज्ञ देश के लिये अधिकारों की माँग करते हुये इस बात का भी ख्याल रखते थे कि अँगरेज राजनीतिज्ञ उनसे असंतुष्ट न हो जायें।

भारतीय संस्कृति के अनुयायी—

सुरेन्द्र बाबू का एक बहुत बड़ा गुण यह था कि शिक्षा प्राप्ति के लिये बहुत समय तक विदेशी वातावरण में रहने पर भी वे अपने धर्म, समाज तथा राष्ट्रीयता के भावों से ओत-प्रोत थे। उन्होंने जीवन भर भारतीय एकता और राष्ट्रीयता की वृद्धि के लिये उद्योग किया। इसके लिये उन्होंने काँग्रेस की स्थापना से भी पहले कार्यारम्भ किया और काँग्रेस को सुदृढ़ और स्थायी बनाने में बहुत अधिक परिश्रम किया। इसके लिये वे भारतीय युवकों में इटली के महान देशभक्त मैजिनी के सिद्धान्तों का प्रचार किया करते थे। उनसे मतभेद होने पर भी महात्मा गाँधी तथा अन्य नेताओं ने उनको एक प्रमुख राष्ट्र-निर्माता घोषित किया है।

सुरेन्द्र बाबू धार्मिक कार्यों में बड़ी श्रद्धा रखते थे और राजनीतिक कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी सदैव ईश्वराराधना करते रहे। उनकी पोशाक तथा रहन-सहन सदा स्वदेशी रही। सामाजिक मामलों में वे सदा एक सुधारवादी रहे। वे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के विधवाओं के उद्धार सम्बन्धी आन्दोलन से बहुत प्रभावित थे और कहा करते थे कि मैं राजनीतिक कार्यों से छुट्टी पाकर विद्या सागर जी के अपूर्ण कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करूँगा निस्सन्देह वे देश और समाज के एक सच्चे सेवक थे और जीवन पर्यन्त इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहे।

युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन कथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिख कर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पै०

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org